भूमिका

रामायण हमारे देश का राष्ट्रीय महाकाव्य है । इस महान् ग्रंथ में वैयक्तिक पारिवारिक और सामाजिक आदर्शों का अत्यंत मार्मिक रूप में अंकन हुआ है । यह एक ऐसे महामानव की उज्ज्वल गाथा है जो एक ओर दलित–पीड़ितवर्ग के प्रति करूणार्द्र है तो दूसरी ओर अत्याचारी दानवी शक्तियों के उन्मूलन के लिए तत्पर ।

भारतीय वाङ्मय में बाल्मीकि–रामायण से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक काव्य, नाटक आदि लिखे गये हैं और अब भी लिखे जा रहे हैं । पुराणों में भी राम–कथा को महत्वपूर्ण स्थान मिला है । अनेक विदेशी भाषाओं में रामकथा का अनुवाद,रूपान्तर, विकास और विस्तार हुआ है।धर्म–दर्शन–संस्कृति–समाज में राम के माध्यम से मर्यादाएं स्थापित हुई हैं। राम एक ऐसे सांस्कृतिक प्रतीक बन गये हैं, जिनके माध्यम से प्रत्येक युग अपनी समस्याओं का प्रभावी समाधान खोज सकता है ।

भारत के बाहर भी रामकथा का प्रचार शताब्दियों से रहा है । पूर्वी एशिया के कम–से –कम तीन देशों में रामायण राष्ट्रीय काव्य घोषित किया जा चुका है । इंडोनेशिया में बौद्धों और मुसलमानों के विवाह के समय भी रामायण अथवा महाभारत का कोई–न–कोई दृश्य प्रस्तुत किया जाता है । वहां एक ऐसा विशाल रंगमंच बनाया गया है जिस पर 400 अभिनेता एक साथ अभिनय कर सकते हैं । थाई देश की अपनी अयोध्या है । वहां के मन्दिर में सम्पूर्ण रामायण दीवारों पर अंकित है । यहां भी जब तक रामायण के किसी प्रसंग का पाठ नहीं कर लिया जाता, तब तक अनुष्ठान पूरा नहीं होता । यहां के राजाओं के अपने नाम गद्दी पर बैठते ही छूट जाते हैं और वे राम प्रथम, राम द्वितीय आदि नामों से प्रसिद्ध हो जाते हैं ।

कम्बोडिया (कम्बुज) में भी अन्य पूर्वी देशों के समान ही यह प्रथा है कि राजवंशीय लोग ही रामायण के सत्पात्रों का अभिनय कर सकते हैं। वहाँ के भूतपूर्व शासक सिंहानुक की

पुत्री राजकुमारी पुष्पा सीता का सुन्दर अभिनय किया करती थी ।

लघुभारत मारीशस तो मारीच का देश ही माना गया है । वहां के अधिकांश घरों में रामकथा गूंजती है । अपने देश की भी लगभग सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में असंख्य रामकाव्यों का सृजन हुआ है इन ग्रंथों में रामायण की अन्तर्निहित रागिनी नहीं बदली–राम नहीं बदले, केवल रामकथा के वेश और परिवेश बदले हैं । भारत के अन्य प्रदेशों की परम्परा को निभाते हुए हरियाणा प्रदेश भी रामकाव्य सृजन में पीछे नहीं रहा है । हरियाणा के जन–मानस का भी रामकथा से घनिष्ठ सम्पर्क है ।

तुलना प्रायः दो प्रतिनिधि रचनाओं या इन रचनाओं के विशिष्ट तत्त्वों की ही अधिक सरलता से की जाती है किन्तु दो रचनाकारों के किसी एक पूरे विषय की काव्य–परम्परा की तुलना अपने में एक विस्तृत एवं उलझा हुआ विषय है । तुलनात्मक अध्ययन में अभिरूचि प्रदर्शित करने वाले कई विद्वानों ने कुछ वर्षों से कुछ प्रान्तीय भाषाओं की मुख्य रामायणों की तुलना उपाधि–सापेक्ष या उपाधि–निरपेक्ष 'रामचरितमानस' से प्रस्तुत की है । इस तरह दो लेखकों के प्रमुख ग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा दोनों काव्यों की वस्तु एवं कला का परिचय तो मिल जाता है, किन्तु यहां विषय की उतनी व्यापकता नहीं रहती है,जिससे दोनों रचनाकारों के काव्यों–ग्रंथों के आधार पर परम्परागत, वस्तुगत एवं कलात्मक विवेचना प्रस्तुत की जा सके । प्रस्तुत शोध–विषय **"अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण तथा आर्य संगीत रामायण का तुलनात्मक अध्ययन"** इस दिशा का एक नया प्रयास है । यहां पर "अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण " व श्री यशवंत सिंह वर्मा टोहानवी कृत "आर्य संगीत रामायण " रामकथा विषयक काव्य–ग्रंथों के साम्य–वैषम्य का निर्देश करते हुए ही उनकी पारस्परिक तुलना करने का प्रयास किया गया है ।

राम–कथा पर जितना शोध–कार्य सम्पन्न हो चुका है, उतना कदाचित् हिन्दी के किसी भी अन्य साहित्यकार के साहित्य पर नहीं हो सका है । यह कार्य परिणाम की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, वरन् उसका अधिकांश स्तर की दृष्टि से भी मूल्यवान है । ऐसी स्थिति में **"अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण तथा आर्य संगीत रामायण का तुलनात्मक अध्ययन"** विषयक शोध के क्षेत्र में प्रवेश करना और उसे किंचित् आगे बढ़ाने की दिशा में

प्रयत्नशील होना निश्चय ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य है । प्रस्तुत शोधक दायित्व की गुरूता और अपनी सीमाओं से अवगत होते हुए भी एक संकल्पशील और आस्थावान् साधक की भांति रामकथा–विषयक शोध में प्रवृत हुआ है । यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि ''अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण''व यशवंत सिंह वर्मा 'टोहानवी' कृत रामायण '' आर्य संगीत रामायण'' पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है ।

''अहमदबख्श थानेसरी–कृत रामायण तथा आर्य संगीत रामायण का तुलनात्मक अध्ययन'' हरियाणवी भाषा के प्रमुख राम काव्यों पर यह प्रथम प्रयास है । उपर्युक्त अध्ययन सात अध्यायों में विभक्त है । प्रत्येक अध्याय की सामग्री का विषय–क्रम निम्न प्रकार है :

''विषय–प्रवेश'' में शोध–प्रबंध की आधार–भूमि प्रस्तुत की गई है जिसके अन्तर्गत रामकथा अहमदबख्श थानेसरी–कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायण के उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

प्रथम अध्याय ''अहमदबख्श थानेसरी–कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायण एक परिचय''शीर्षक के अन्तर्गत थानेसरीकृत रामायण व आर्य संगीत रामायण का सामान्य परिचय पूर्ण तथ्यों सहित दिया गया है ।

द्वितीय अध्याय–''थानेसरी कृत रामायण और आर्य संगीत रामायण की कथावस्तु की तुलनात्मक समीक्षा'' में थानेसरी कृत रामायण व आर्य संगीत रामायण की कथावस्तु का सार संक्षेप में दिया गया है ।

तृतीय अध्याय ''थानेसरी कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायण में चरित्र–चित्रण'' के अन्तर्गत दोनों रामायणों के प्रमुख पुरूष पात्र (राम, लक्ष्मण, जनक, रावण, दशरथ व भरत आदि) स्त्री पात्र (सीता, कौशल्या, अनुसुइया व कैकेई आदि) तथा अन्य अलौकिक पात्रों के चरित्रों का उदाहरण सहित तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय ''थानेसरी कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायण में प्रकृति–चित्रण'' के अन्तर्गत दोनों रामायणों के प्रकृति, जनपद, नगर, वन–उपवन, पर्वत, सरिता व मानव–प्रकृति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

पंचम अध्याय '' थानेसरी कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायण में रस परिपाक

'' के अन्तर्गत थानेसरी कृत रामायण व आर्य संगीत रामायण में रस परिपाक को लेकर विभिन्न दृष्टिकोणों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

षष्ठ अध्याय ''थानेसरी कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायण कला की दृष्टि से'' में थानेसरी कृत रामायण व आर्य संगीत रामायण का कला की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

उपसंहार मे शोध प्रबंध का सारांश दिया गया है तथा ग्रन्थानुक्रमणिका में प्रयुक्त पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं एवं कोशों की सूची दी गयी है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध डॉ0 पूर्णचन्द शर्मा, रीडर,हिन्दी–विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के सुयोग्य एवं आत्मीयतापूर्ण निर्देशन में सम्पन्न किया गया है शोध–प्रबंध के लेखन–काल में उन्होंने एक तत्वदर्शी मनीषी और तपोनिष्ठ साहित्य–साधक के रूप में मेरी शोध संबंधी अनेक समस्याओं के सुविचारित समाधान प्रस्तुत किये और समग्र प्रबंध को आद्योपान्त मनोयोगपूर्वक सुनकर अनेक महत्त्वपूर्ण सुझावों से लाभान्वित करने की कृपा की । उनके इस उपकार के प्रति दान स्वरूप 'धन्यवाद' कहकर उऋण होने की चेष्टा आत्म प्रवंचना से कम न होगी , यही मानकर मैं उनके प्रति सादर, साभार श्रद्धावनत हूँ । सच तो यह है कि यह शोध–प्रबंध उनकी ही सत्प्रेरणा और शुभाशंसा का पुण्य प्रसाद है ।

श्रद्धेय डॉ0 नरेश मिश्र, विभागाध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के शुभकामना–संवलित, प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप ही शोध–प्रबंध पूरा हो सका है । जिन्होंने मेरी शोध–जिज्ञासा और उमंग को देखकर मुझे नवीन कार्य–दिशा की ओर उन्मुख किया । अतःउनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझती हूँ ।

श्रद्धेय डॉ0 हरी शरन वर्मा की भी मैं हार्दिक आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध–संबंधी पुस्तकों को एकत्रित करवाने में सहयोग ही नहीं दिया अपितु समय–समय पर अनेक अमूल्य सुझाव देकर मेरा मार्ग भी प्रशस्त किया।

इस शुभ अवसर पर मैं श्रीमती बीरमती देवी को भी नहीं भुला सकती जिन्होंने इस शोध–प्रबन्ध को कम्प्यूटर द्वारा अच्छी प्रकार से समय पर टंकण कार्य पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध को पूरा करने में मुझे अनेक विद्वानों के ग्रंथों, प्रकाशित अप्रकाशित शोध–प्रबंधों,पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों तथा शोध–पत्रों से पर्याप्त सहायता मिली है । पाद टिप्पणी तथा ग्रंथानुक्रमणिका में उनके नामों और कृतियों का पूरा उल्लेख कर दिया गया है । अतः उन सभी ग्रंथकारों के प्रति भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिनके बहुमूल्य ग्रंथों से मैंने किंचित् भी सहायता ली है ।

विनीता

दीपिका गोयल

दिनांक.....दिसम्बर ,2002

(दीपिका गोयल)